# 05 / 12 / 78 की अव्यक्त वाणी

## पर आधारित योग अनुभूति

विकारों की सम्पूर्ण आहुति द्वारा परिवर्तन होने का अनुभव

➢➢ मैं संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूं...

➳ _ ➳ यह मेरा मरजीवा जन्म है...

→ स्वयं परमात्मा ने मुझे यह जीवन दिया है...

→ स्वयं ही स्वयं के इस ब्राह्मण जीवन को देखती हूँ...

→ दिव्य जीवन... दिव्य बुद्धि... की गिफ्ट मुझे मिली है...

→ अभी मैं आत्मा इस संगमयुग में विचरण कर रही हूं...

- विषय वैतरणी से निकल कर यहाँ पहुँचने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ...
- मेरी नाव के खिवैया स्वयं परम पिता परमात्मा हैं...
- इस युग में बाबा ने कुछ श्रेष्ठ आत्माओं को ही स्थान दिया है...
- तो मैं भाग्यशाली आत्मा हूं...
  - वाह रे वाह मैं भाग्यवान आत्मा...

➢➢ मैं महावीर आत्मा हूं...

➳ _ ➳ स्वयं ईश्वर ने मुझे विजय का तिलक लगाया है...

→ मैं स्मृति सो समर्थी स्वरूप आत्मा हूं...

→ मैं कौन हूं... किसकी हूं...

→ इस श्रेष्ठ स्मृति द्वारा श्रेष्ठ समर्थी स्वरूप धारण करती हूं...

- मेरी सारी स्मृतियां अब जाग्रत हैं...

➳ _ ➳ मैं अपने शुद्रपन के संस्कारों की पहचान कर उन्हें दृढ़ संकल्प द्वारा स्वयं में से समाप्त कर रही हूं...

→ मैं त्यागी हुई कोई चीज धारण नहीं करती हूं...

→ मैने अपने जीवन में से शुद्रपन को पूर्णतया खत्म कर दिया है...

→ बाबा को वचन दिया है अब कभी विष का पान नही करना है...

→ मैं रॉयल आत्मा हूं तो भूल से भी फेंकी हुई चीज़, गन्दी चीज़, बेकार चीज़, जली सड़ी हुई वस्तु फिर से उठाकर यूज़ नहीं करती हूं...

- दृढ संकल्प और दृढ़ता सम्पन्न अभ्यास द्वारा सारे विकारों की सम्पूर्ण आहुति दे दी है...

➢➢ अब मैं एक ही निश्चय और नशे में रहने वाली आत्मा हूँ...

➳ _ ➳ मैं सर्व विघ्नों को पार करने वाली विघ्न जीत आत्मा हूँ...

→ इस अभ्यास द्वारा सब प्रकार की तमोगुणी परिस्थितियों और आपदाओं पर जीत पाती जा रही हूं...

- सम्पूर्ण पवित्र दृष्टि और वृत्ति की मालिक बन रही हूं...

➳ _ ➳ मुझ आत्मा ने अब विकारी चोला उतार दिया है...

→ ईश्वरीय चोला पहन कर पवित्र हंस बुद्धि बनती जा रही हूं...

→ मुझ आत्मा की बुद्धि हंस बुद्धि से स्थिर बुद्धि...

→ प्रभु प्रीत बुद्धि...

→ निश्चय बुद्धि...

→ समर्पित बुद्धि...

→ समर्पण बुद्धि...

→ सशक्त बुद्धि...

→ पॉवरफुल बन गई है...

→ श्रेष्ठ सम्बन्ध... श्रेष्ठ सम्पत्ति की अधिकारी... मैं कल्याणकारी आत्मा बन गई हूँ...

→ शुभभावना, शुभकामना रख और आत्माओं का भी कल्याण कर रही हूं...

- मुझे बाबा ने जानीजाननहार आत्मा बनाया है...
- इससे मेरी रूह की रंगत बदल गयी है...
  - रूहानियत भरी ईश्वरीय झलक मुझमें दिखाई देने लग गयी है...